तृतीय अध्याय

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक जीवन

''ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक जीवन''

परिवार : अर्थ, स्वरूप, परिभाषा -

3.1. प्रस्तावना -

विश्व के प्रत्येक समाज में और सभी युगों में किसी न किसी रूप में परिवार अवश्य दिखाई देता है। परिवार परंपरागत रूप से चला आ रहा है। रामबिहारीसिंह तोमर कहते हैं - ''परिवार एक मौलिक सामाजिक संस्था है। यह आदि काल से चला आ रहा है। यह समाज की प्रथम इकाई भी है और सबसे घनिष्ट सामाजिक समूह भी।''[1] प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में परिवार का महत्त्व होता है। व्यक्ति किसी-न-किसी परिवार का सदस्य अवश्य होता है। व्यक्ति का समाजीकरण करने में परिवार की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चों का पालन-पोषण उनकी देखभाल या उनपर संस्कार जितने परिवार में सहजरूप से दिए जा सकते हैं वैसे दूसरी जगह नहीं दिए जा सकते। सुनीता श्रीमाल कहती हैं - ''बच्चे की सांस्कृतिक शिक्षा तथा एक-दूसरे के प्रति सहयोग की भावना जितने सहज और अनौपचारिक रूप से परिवार में संभव है उतने किसी दूसरे मानव समूह में संभव नहीं। समाज के अस्तित्व की रक्षा करने का पूर्ण दायित्व भी परिवार का ही है।''[2]

3.2. उत्पत्ति -

परिवार की व्युत्पत्ति के विषय में अनेक विद्वानों के मत अलग-अलग हैं। परिवार की व्युत्पत्ति किसी एक कालखंड़ में नहीं हुई है वह तो एक विकास है। कैलाशनाथ शर्मा और शंभूरत्न त्रिपाठी कहते हैं - ''जहाँ समाज है, वहाँ परिवार भी। ऐसा कोई मानव समाज नहीं होगा जहाँ किसी-न-किसी रूप में परिवार न हो। सृष्टि के इतिहास में ऐसा कोई युग नहीं हो सकता है जब परिवार का अस्तित्व न रहा हो।''[3] यहाँ स्पष्ट है कि परिवार का समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है। परिवार की न उत्पत्ति हुई है अथवा यह किसी एक कारण का परिणाम नहीं है। यह मनुष्य की अनेक इच्छाओं के फलस्वरूप आज इस जटिल रूप पर पहुँचा है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि परिवार की व्युत्पत्ति नहीं हुई है बल्कि विकास हुआ है।

जब से मानव है तब से परिवार का जन्म हुआ है। व्यक्ति की परिवार बनाकर रहना यह एक नैसर्गिक प्रवृत्ति है। बारीकी से देखा जाए तो पशु-पक्षी का भी परिवार होता है। यहाँ तक कहा जाता है कि समाज में जिस प्रकार एक स्त्री एक ही पुरूष (पति) के साथ शरीर संबंध रखती है उसी प्रकार कई पशु-पक्षी भी है। कैलाशनाथ शर्मा तथा शंभूनाथ त्रिपाठी कहते हैं - ''परिवार का जन्म मनुष्य जाति के जन्म के साथ ही हुआ। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि परिवार बनाकर रहना मनुष्य की एक नैसर्गिक प्रवृत्ति है। इसलिए परिवार का जन्म मनुष्य के इस पृथ्वी में अवतरित होने के साथ हुआ है।''[4]

परिवार निर्माण के अलग-अलग कारण हैं। प्राचीन काल में हर स्त्री किसी भी पुरूष के साथ शरीर संबंध रख सकती थी और कितने भी पुरूष के साथ रह सकती थी। इस कारण संतान किस की ? यह प्रश्न उठता था। आगे चलकर मानव समूह करके रहने लगा और सिर्फ अपने समूह की स्त्रियों में से किसी भी स्त्री के साथ शरीर संबंध रखने लगा। किंतु ऐसी दिक्कतें आने लगी कि संतान का पिता कौन ? इस पर प्रश्नचिन्ह लग जाता था। इस कारण आगे चलकर एक समूह का पुरूष दूसरे समूह की स्त्री के साथ शरीर संबंध रखने लगा और एक समूह की स्त्री दूसरे समूह के पुरूष के साथ शरीर संबंध रखने लगी। आगे पुरूष अपनी स्त्री को दूसरे के साथ शरीर संबंध रखना नापसंद करने लगा तो एक ही स्त्री के साथ एक ही पुरूष के शरीर संबंध रहने लगे और एक ही पुरूष के साथ एक ही स्त्री के संबंध रहने लगे। श्रीमाल सुनीता इस विषय को लेकर कहती हैं - ''वस्तुत: परिवार की उत्पत्ति के लिए अनेक कारण रहे हैं जैसे व्यक्ति की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति बच्चों का लालन-पालन, सुरक्षा की भावना, यौन-इच्छाओं की पूर्ति तथा अपना वंश चलाने की इच्छा ने ही परिवार को जन्म दिया होगा।''[5]

3.3. परिभाषा -

परिवार हमेशा बदलता रहा है इस कारण उसकी परिभाषा देना कठिन है। अलग-अलग विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। अत: हम सिर्फ श्रीमती सुनीता श्रीमाल की परिभाषा देखेंगे - ''विस्तृत अर्थ में परिवार ऐसे व्यक्तियों का संगठन है जिसमें माता-पिता और बच्चों के अलावा रक्त संबंधी और

गोद लिए हुए व्यक्ति भी समाज स्वीकृति प्रदान करता है, सम्मिलित हैं। ये एक निश्चित मकान में रहते हैं और स्वार्थ भावना से परे एक-दूसरे के प्रति अपने को कर्तव्य समझते हैं।"[6]

3.4. महत्त्व -

परिवार समाज की मुलभूत इकाई है। परिवार का केंद्रबिंदु व्यक्ति होता है। समाज, व्यक्ति और परिवार एक-दूसरे के पुरक हैं। परिवार को छोड़कर व्यक्ति नहीं रह सकता और परिवारों के बगैर समाज नहीं बन सकता। सुनीता श्रीमाल लिखती हैं - "परिवार ही मनुष्य की मुलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। परिवार के अभाव में मनुष्य का जीवन पशुतुल्य है। व्यक्ति का समाजीकरण परिवार में ही संभव है। व्यक्ति जन्म से ही परिवार से जुड़ा होता है और इस नाते उसके परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति कुछ संबंध होते हैं, जो प्राय: निश्चित होते हैं, जैसे - पिता पुत्र का संबंध, माता पुत्री का संबंध, भाई-बहन का संबंध आदि।"[7] व्यक्ति परिवार से अलग नहीं रह सकता। परिवार एक ऐसा स्थान है जो हमे अनेक प्रकार की सुरक्षा प्रदान करती है। परिवार वह स्थान है जहाँ हम जब चाहे तब जा सकते हैं। परिवार के अंदर कोई भी रोक-टोक नहीं होती। हमारे संबंध अनौपचारिक होते हैं। परिवार में माता-पिता, भाई-बहन तथा अन्य संबंधियों में जो संबंध होता है, वह एक विशिष्ट अर्थ रखता है। इस संबंधों को हम हृदय के संबंध कह सकते हैं। संबंध अत्यंत अकृत्रिम एवं सरल होते हैं। इनमें अपनापन, ममता, प्रेम, भाईचारे की भावना पाई जाती है। यह सब संबंध उनमें प्रमुखत: प्रकृतिगत होते हैं।

परिवार का प्रमुख कार्य शिशु के पालन पोषण, उनकी शिक्षा-दीक्षा, संस्कार से होता है। परिवार व्यक्ति की प्रथम पाठशाला है। जिस प्रदेश में प्राथमिक शालाएँ उपलब्ध नहीं हैं वहाँ आज भी परिवार ही बच्चों को संस्कार देने का कार्य करता है। वैसे देखा जाए तो बच्चों का अधिक समय परिवार में बीत जाता है, इस कारण उसपर परिवार के संस्कार अधिक प्रभाव करते हैं। परिवार से व्यक्ति रीति-रिवाज, भाषा, संस्कृति, मनोरंजन, धर्म आदि सीखता है। राम बिहारी सिंह कहते हैं - "परिवार समाजीकरण का भी उत्तरदायी होता है। परिवार ही बच्चे को समाज के रीति-रिवाज, भाषा एवं संस्कृति सिखाता है। परिवार समाज नियंत्रण भी करता है। परिवार धार्मिक केंद्र भी है। परिवार सांस्कृतिक कार्य में भी भाग लेता है, इसलिए परिवार का अत्याधिक

महत्त्व है। विद्वानों ने तो यहाँ तक कहा है कि प्रत्येक समाज का जीवित रहना उस समाज के परिवारों पर आधारित है।''[8]

पारिवारिक सुख जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पुरस्कार है। कई बार लोग अपने जीवन में महान कर्तव्यों को पूरा करना चाहते हैं, परंतु पारिवारिक सुख और शांति के अभाव में नहीं कर पाते। यदि हम पारिवारिक सुख का विश्लेषण करें तो हमें मालूम होगा कि वे परिवार कभी भी आगे नहीं बढ़ पाए जिनमें पारिवारिक सुख नहीं पाया जाता था। परिवार में सुख शांति हो तो परिवार के सदस्यों का विकास होता है।

3.5. परिवार के प्रकार -

परिवार के अनेक प्रकार हैं। निवास, सत्ता, विवाह संबंध, सदस्य संस्था आदि के आधार पर परिवार के अलग-अलग प्रकार हैं। श्रीमती सुनीता श्रीमाल जी ने परिवार के प्रकार निम्नानुसार बताए हैं -

''1 निवास के आधार पर -

(1) पितृ स्थानीय परिवार

(2) मातृ स्थानीय परिवार

(3) नव स्थानीय परिवार

2. सत्ता तथा वंशनाम के आधार पर -

(1) मातृसत्ताक परिवार

(2) पितृसत्ताक परिवार

3. विवाह संबंध के आधार पर -

(1) एक विवाह परिवार

(2) बहु विवाह परिवार

4. सदस्य संस्था के आधार पर -

(1) एकाकी परिवार

(2) विवाह संबंधी परिवार

(3) संयुक्त परिवार।"[9]

डॉ. कैलाशनाथ शर्मा तथा शंभूरत्न त्रिपाठी इन्होंने पारिवारिक समाजशास्त्र इस पुस्तक में परिवार के निम्न प्रकार बताए हैं।

"1. संयुक्त परिवार और वैयक्तिक परिवार

2. पितृमूलक परिवार और मातृमूलक परिवार।"

उपर्युक्त परिवार के अनेक भेदों में से संयुक्त परिवार और वैयक्तिक परिवार हमारे विवेच्य विषय की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। संयुक्त परिवार में एक से अधिक पीढ़ियों के सदस्य एक साथ रहते हैं, उनका खाना-पीना, रहन-सहन, धार्मिक कार्य, संपत्ति का हक्क, सभी सदस्यों में बाँटा जाता है। संयुक्त परिवार के विषय में श्रीमती सुनीता श्रीमाल कहती हैं - "ऐसे परिवारों में एक से अधिक पीढ़ियों के सदस्य सम्मिलित होते हैं जो एक ही घर में रहते हैं। एक ही स्थान पर भोजन करते हैं और एक ही देवी-देवता की पूजा करते हैं। सभी सदस्य आर्थिक उपार्जन में भाग लेते हैं। ऐसे परिवारों में सबसे वृद्ध व्यक्ति परिवार का मुखिया होता है जिसकी आज्ञा का पालन परिवार के सभी सदस्य करते हैं।"[11] यहाँ ध्यान में आ जाता है कि संयुक्त परिवार कैसा होता है और भी स्पष्टता के लिए कैलाशनाथ शर्मा और शंभूरत्न त्रिपाठी ने पारिवारिक समाजशास्त्र इस पुस्तक में संयुक्त परिवार की व्याख्या निम्नानुसार दी है - "संयुक्त पारिवारिक जीवन भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता है। इसमें सामान्यत: चार या पाँच पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते हैं, जिनमें पति-पत्नी, माता-पिता, चाचा-चाची, पुत्र-वधू, भतीजे, उनकी स्त्रियाँ, नाती, अविवाहित नातिने, और पुत्रियाँ आदि होती हैं।"[12]

वैयक्तिक परिवार में पति-पत्नी और उनकी अविवाहित संतान का समावेश होता है। आधुनिक काल में वैयक्तिक परिवार ही अधिक दिखाई दे रहे हैं। आज के युग में संयुक्त परिवार बिखर रहे है। परिवार में संघर्ष, घुटन, संत्रास, तनाव आदि का साम्राज्य निर्माण हो रहा है। परिवार के व्यक्ति एक-दूसरे से अजनबी होते जा रहे हैं। उनमें अपनेपन की भावना, भाईचारे की भावना लुप्त हो रही है। पिता का पुत्र के प्रति आदर युक्त भाव, माता का अपने पुत्र के प्रति प्रेमभाव परिस्थितियों के कारण कम हो रहा है। आज की युगीन परिस्थितियों ने मानव को इतना झुका दिया है कि मन न चाहते हुए भी उसे अपने संबंधियों से दूर जाना पड़ता है। कभी-कभी यह स्वार्थ के कारण भी होता है। परिवार विघटन के बारे में श्रीमती सुनीता श्रीमाल कहती हैं -

''इसका प्रमुख कारण औद्योगीकरण और नागरीकरण है जिसके फलस्वरूप सामाजिक ढ़ाँचे में परिवर्तन आ गया है। परिवार का आकार दिन-प्रतिदिन सीमित होता जा रहा है। व्यक्तिवादित का विकास हो रहा है।''[13]

अब व्यक्ति स्वयं अपने बारे में अधिक सोचने लगा है और परिवार के प्रति उसके उत्तरदायित्व की भावना में कमी आ रही है। परिवार से संबंधित बहुत से कार्य आजकल अन्य संस्थाओं द्वारा भी किए जाने लगे हैं। राज्य का महत्त्व बढ़ता जा रहा है तथा स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता से उनमें आत्मनिर्भरता वृद्धि भी हुई है। व्यक्ति साधनों की खोज में नगरों में आने लगे। वहाँ नए लोगों से उनका परिचय बढ़ने लगा और व्यक्ति रिश्तेदारी से अधिक इन नए संबंधों को महत्त्व देने लगा। परिवार के प्रति लगाव कम होने लगा और व्यक्तिगत रूचि के आधार पर संबंधों का दायरा विस्तृत होने लगा। स्त्रियाँ घर की चार-दीवारी से बाहर आने लगी। उन्हें पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। वे भी पुरूषों के साथ कदम से कदम मिलाकार काम करती हैं। उनका संबंध भी अपने पति, बच्चों तथा सगे-संबंधियों तक ही सीमित नहीं है। दफ्तरों और संस्थानों के लोगों से भी उनका परिचय बढ़ने लगा है। अनेक राजनैतिक कार्यों में भी व्यक्ति अब रूचि लेता है। चुनाव में भाग लेने तथा स्वतंत्र राजनीतिक जीवन जीने की लालसा से वह पारिवारिक बंधनों को स्वीकार नहीं करती। इसी तरह शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी व्यक्ति अब परिवार से बाहर शिक्षण संस्थाओं में जाता है जहाँ उसका संपर्क कई लोगों से होता है। यही कारण है कि आज संबंधों का केंद्र परिवार ही नहीं है बल्कि परिवार से बाहर भी है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर ध्यान में आता है कि परिवार समय के अनुसार बदलता रहा है। परिवार व्यक्ति विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। समाज की इकाई परिवार है। जिस देश के परिवारों में शांति और सुख होगा उस देश का विकास होगा। परिवार का विकास हुआ तो समाज का भी विकास अपने आप होता है।

3.6. पारिवारिक जीवन -

ज्ञानरंजन की कहानियों का केंद्र बिंदु परिवार है। ज्ञानरंजन की सभी कहानियों में से बारह कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण दिखाई देता है। कहानियों में चित्रित परिवारों में तनाव, संघर्ष दिखाई देता है। परिवारों के सदस्य एक-दूसरे को चुनौती बनकर सामने आते हैं। उनकी 'कलह', 'फेंस के इधर और

उधर', 'शेष होते हुए', 'पिता', 'दिलचस्पी', 'संबंध', 'अमरूद का पेड़', 'मनहूस बंगला', 'बहिर्गमन', 'गोपनीयता' कहानियों में पारिवारिक जीवन का चित्रण दिखाई देता है।

'कलह' कहानी में सौत घर में आनेवाली है इस कारण स्वाति के परिवार में तनाव है। आर्थिक समस्या और व्यक्तिवाद की भावना के कारण 'शेष होते हुए' में परिवार विघटित हो रहा है। 'पिता' कहानी में पिता के पुराने विचारों को टकरा-टकरा कर पुत्र घायल हो जाता है। यहाँ विचारों में मेल न होने के कारण परिवार में तनाव है। 'संबंध' कहानी में आर्थिक समस्या के कारण भाई-भाई में संघर्ष है। 'अमरूद का पेड़' कहानी में बड़े भाई की व्यक्तिवाद की भावना के कारण और बहु की चालाकी के कारण परिवार विघटित हो रहा दिखाई देता है। 'मनहूस बंगला' कहानी में संयुक्त परिवार में स्वतंत्रता पाने के लिए झगड़ा हो रहा है। परिवार का मुखिया मरने के बाद सभी सदस्य घर से बाहर जाते हैं। यहाँ स्वतंत्र विचार न मिलने के कारण परिवार में दूरी बढ़ती गई है। 'बहिर्गमन' कहानी में परदेस के आकर्षण के कारण मनोहर अपनी पत्नी को और परिवार को छोड़ देता है। यहाँ अर्थ को केंद्रिय माना गया है जिससे परिवार बिखरा हुआ दिखाई देता है। 'गोपनीयता' कहानी में गर्भपात की घटना के कारण परिवार में अनेक समस्याएँ निर्माण हो गई हैं। 'दाम्पत्य' कहानी में अनमेल विचारों और रूचियों के बदलाव के स्वरूप के कारण परिवार में दांपत्य जीवन में दु:ख भरा हुआ है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर ध्यान में आता है कि ज्ञानरंजन की कहानियों में सौत की समस्या, व्यक्तिवाद की भावना, विचारों में अनमेल, संयुक्त परिवार, परदेसी आकर्षण, गर्भपात आदि कारणों से पारिवारिक जीवन दु:खी हो गया है। जिस परिवार में आर्थिक समस्या नहीं उस परिवार में संघर्ष नहीं है। संयुक्त परिवार में अनेक समस्याएँ दिखाई देती हैं लेकिन विभक्त परिवार में कम दिखाई देती है। 'सीमाएँ' कहानी में विवेक का परिवार छोटा है, तो उसका परिवार सुखी है। 'छलांग' कहानी में श्रीमती ज्वेल और श्रीयुत ज्वेल दोनों और उनकी दो संतान ही हैं, इस कारण परिवार सुखी है। 'यात्रा' कहानी का कथानायक सैनिक की नौकरी करता है, इस कारण उसके परिवार में संघर्ष नहीं है। 'चुप्पियाँ' कहानी में करन के फूफा-फूफी और एक अनाथ लड़की है, इस कारण उनका परिवार भी सुखी दिखाई देता है। जिस परिवार में पुरानी परंपरा है उस परिवार में संघर्ष है और जो नई परंपरा का है उसमें आनंद है। इसका समर्थन 'फेंस का इधर और उधर' कहानी के दो अलग-अलग विचार के परिवार करते हैं।

इस प्रकार ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित परिवारों में सुख से अधिक दु:ख हैं।

3.7. पारस्पारिक संबंध -

परिवार संस्था भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता की देन है। आजकल संयुक्त परिवार का विघटन होकर उसका रूप छोटा हो रहा है। ग्रामांचल में आज भी संयुक्त परिवार दिखाई देते हैं, किंतु महानगर में टूटते हुए संयुक्त परिवार दिखाई देते हैं। परिवार ग्रामांचल का हो या फिर महानगर का हो परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे से रक्त-संबंधों से जुड़े होते हैं। जैसे पति-पत्नी, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, माता-पुत्री, भाई-भाई, भाई-बहन, देवर-भाभी, सास-बहु, नंनद-भाभी आदि में एक दूसरे के प्रति प्रेम, अपनापन, आदरभाव, भाईचारा होता है। किंतु वर्तमान काल में इस संबंध में काफी परिवर्तन आ गया है। व्यक्तिवाद की भावना बढ़ रही है, बेरोजगारी, अर्थ की प्रधानता, अविश्वास, संघर्ष, घुटन, तनाव आदि कारणों से परिवार विघटित होता जा रहा है। इस सभी कारणों से व्यक्ति में विद्रुपताएँ, विकृतियाँ आई हैं, जिनका यथार्थ चित्रण ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों के द्वारा चित्रित किया है।

ज्ञानरंजन साठोत्तरी कहानीकारों में महत्त्वपूर्ण हैं। सन् 60 के बाद देश की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय हो गई। इस कारण परिवार में अनेक समस्याएँ निर्माण हुई हैं। अत: तत्कालीन आर्थिक परिस्थितियों का विचार करना महत्त्वपूर्ण है। डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय कहते हैं - "आर्थिक विषमताएँ इतनी बढ़ गई थी कि संयुक्त परिवार प्रथा के ध्वंसावशेष भी शेष न रह गए और रह भी नहीं सकते। बड़े नगरों की बात छोड़ दें तो कस्बों एवं ग्रामों में भी यही अलगाव की प्रवृत्ति बढ़ गई और संस्था में से संस्था फिर उसमें से दूसरी संस्था, इस प्रकार संस्थाएँ बनती गई और हर व्यक्ति अपने में ही सिमट कर एक संस्था बन गया। स्वातंत्र्योत्तर कालीन भारतीय जीवन-पद्धति का यह सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन था और इसमें हमारे नई कहानीकारों का ध्येय बहुत आकृष्ट किया। यहाँ-तक कि पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-भाई और भाई-बहन तक एक दूसरे के लिए अजनबी और अपरिचित से हो गए।"[14]

परिवार की अनेक समस्याएँ अर्थ के कारण होती हैं। अर्थ जीवन में महत्त्वपूर्ण होता है। अर्थ की प्रधानता को लेकर रामदरश मिश्र लिखते हैं - "परिवर्तन के केंद्र में हमारे पारिवारिक परिवर्तन होते हैं और आज

के समस्त परिवर्तनों के मूल में प्राय: अर्थ ही है। भौतिक सभ्यता ने जहाँ मानव समाज को अज्ञान के अनुशासन से मुक्त कर उसके महत्त्व और योग-क्षेत्र को महत्ता प्रदान की और एक सामाजिक मूल्य दिया वहीं उसे भौतिक भोग और समृद्धि के चाकचिक्य में उलझ कर सारे पुराने और नए मूल्यों से रिक्त कर दिया। मूल्य-रहित व्यक्ति अपनी भौतिक समृद्धि के लिए सारे पारिवारिक मूल्यहीन संबंधों की निर्मिती करता गया। परिवार में मूल्यवादी संबंधों की यह टूटन और मूल्यहीन संबंधों की निर्मिती प्राय: पिता-पुत्र, माँ-पुत्र और पति-पत्नी के बीच देखी जा सकती है। भाई-भाई के, भाई-बहन के संबंध भी इसी संदर्भ में देखे जा सकते हैं।"[15]

ज्ञानरंजन की कहानियों का केंद्रबिंदु मध्यवर्गीय परिवार को चित्रत करना है। मध्यवर्गीय परिवार की विवशताएँ, स्थितियों के सामने झुकना आदि का चित्रण कहानियों में किया है। ममता कालिया लिखती हैं - "ज्ञानरंजन की कहानियाँ बस उनके अगल-बगल की कहानियाँ हैं, घर ग्रहस्थी की कहानियाँ, जिन में भैया है, चाचा है, दीदियाँ हैं, चंट या मूर्ख प्रेमिकाएँ हैं, कुंठित अधेड़ पड़ोसिने हैं और हैं नीरव तरू, सुनसान सड़के और पलाश के पेड़। इससे आगे ज्ञान की दृष्टि नहीं जाती, जाती भी है तो 'फेंस के इधर और उधर' से लौट आती है।"[16] ज्ञानरंजन की कहानियों के विषय को लेकर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी कहते हैं - "ज्ञान की कहानियों का संसार एक परिचित संसार है। उनकी प्राय: सभी कहानियाँ परिवार को केंद्र में रखकर उसके रिश्तों और उसकी समस्याओं को लेकर लिखी गई हैं। इस में भी परिवार का नैतिक आयाम प्रमुख है। पारिवारिक रिश्तों और उनकी कुंठाओं को बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से कहानीकार ने देखा है।"[17] ज्ञानरंजन की कहानियाँ वास्तविक जीवन की कहानियाँ हैं। हर पाठक अपने अनुभव उन कहानियों में अनुभव करता है। हृदयेश कहते हैं - "ज्ञान की कहानियाँ मनुष्य के अनुभव के उत्स तक ले जाती हैं और बड़ी निर्ममता से मानवीय संबंधों की आलोचनात्मक पड़ताल करती हैं। वे जीवन के सूक्ष्म निरीक्षण और अभिव्यक्ति की व्यापकता का अद्भुत परिचय भी कराती है। साथ ही हिंदी कहानियों के आगे नए क्षितिज खोलती है। कथ्य, शिल्प, भाषा, कहानी के अंग को लेकर ज्ञान बेहद सतर्क रहते हैं।"[18]

ज्ञानरंजन ने जो लिखा है वह यथार्थ का चित्रण है। यथार्थ का मतलब जो है वैसा कहना नहीं, बल्कि जो है और उसके पीछे जो छिपा हुआ होता है उसे दिखाना है। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी कहते हैं - "ज्ञानरंजन की कहानियाँ नई यथार्थवादी दृष्टि को सामने लानेवाली कहानियाँ हैं। जीवन के प्रति ज्ञानरंजन की दृष्टि

बड़ी तीखी और आलोचनात्मक है। वे अत्यंत क्रूर होकर मानवीय संबंधों की छानबीन करते हैं और व्यक्ति के भीतर छिपे सही चोर को पकड़ लेते हैं। ज्ञान की कहानियों को पढ़ते हुए लगता है कि उन्होंने जीवन को बहुत करीब से देखा है। चाहे स्त्री-पुरूष का प्रेम और दाम्पत्य संबंध हो या अन्य पारिवारिक संबंध, ज्ञान की दृष्टि सूक्ष्म बारीकियों तक पहुँचती है। वे संबंधों और स्थितियों की विड़ंबनाओं और विसंगतियों को बड़ी निर्भीकता से सामने लाते हैं। यह विशेषता उनकी सभी कहानियों में मिलेगी।"[19] ज्ञानरंजन ने व्यक्ति के अंदर छुपी हुई विकृतियों और विद्रुपताओं पर कड़ा व्यंग्य किया है। आज की भयानक परिस्थितियों के सामने मानव को हर समय झुकना पड़ता है। सुरेश सेठ कहते हैं - "निजी पीड़ा, पराजय, ऊब, हताशा, निराशा, आत्महत्या, भीड़ में अकेलापन, पारिवारिक विघटन, प्रेम और यौन संबंधों का मुर्दा हो जाना और सक्रांत कला में मिसफिट होते हुए युवा-वर्ग की मानसिकता ज्ञान की कहानियों का कुल बोध यही है। लेखक की उपलब्धि यह है कि उसने ईमानदारी के साथ अपने इस बोध का सामना करने का प्रयास किया है, उसने इसे किसी अन्य की तरह सेक्स के शार्टकट में नहीं उलझाया।"[20]

उपर्युक्त विवेचन से ध्यान में आ जाता है कि ज्ञानरंजन ने मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन का मुख्यरूप से चित्रण किया है। ज्ञानरंजन की कुल 26 कहानियों में से 12 कहानियों में परिवार का चित्रण दिखाई देता है। विजयमोहन सिंह कहते हैं - "ज्ञानरंजन सही माने में और पूरी तरह 'संबंधों' के कहानीकार अपनी पीढ़ी के किसी भी कहानीकार से अधिक। 'संबंधों' को समझने की इस बेचैनी को 'शेष होते हुए' से लेकर 'संबंध' तक एक श्वास क्रम से देखा जा सकता है।"[21] इन कहानियों में पारिवारिक तनाव, घुटन, अविश्वास, अजनबीपन, अकेलापन, आत्महत्या, कलह, बेरोजगारी, अर्थ की प्रधानता आदि का चित्रण पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माता-पुत्र, भाई-भाई, भाई-बहन, देवर-भाभी, ननंद-भाभी आदि के आपसी संबंधों के द्वारा चित्रित किया है, जो निम्न प्रकार हैं -

परिवार में एक दूसरे के प्रति अपनापन, विश्वास, प्रेम, ममता रहती है किंतु आज के आधुनिक युग में इन सभी गुणों से परिवार दूर होता जा रहा है। मूल्यों का विघटन हो रहा है। पुत्र अपनी माँ को माँ कहने में लज्जा की बात मान रहा है। प्रेम का स्वरूप बदलता जा रहा है। युवकों की मानसिकता बिगड़ रही है इस कारण शिक्षित होकर भी नौकरी न मिलने के कारण दिशाहीन होता जा रहा है। तात्पर्य यह कि परिवार के सभी सदस्य

अब एक-दूसरे से अजनबी होते जा रहे हैं। पुष्पपाल सिंह कहते हैं - "परिवार में माँ-बाप, भाई-बहन, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री आदि के जितने भी सुदृढ़ संबंध हो सकते थे, उन सबके संबंध में हमारी सोच और चिंतन प्रक्रिया में एक बड़ा भारी अंतर आया है। इन सब क्षेत्रों में व्यक्ति स्वतंत्र्य या व्यक्तित्व की स्वतंत्रता का अत्याधिक महत्त्व रहा है। इस स्वतंत्रता ने एक प्रकार की मूल्यहीनता को भी बढ़ावा दिया। इस स्वतंत्रता के कारण ही व्यक्ति एक प्रकार से आत्मकेंद्रित हुआ जिसके कारण संयुक्त परिवार की इकाइयाँ टूटी और छोटे-छोटे परिवार अस्तित्व में आए।"[22] यहाँ ध्यान में आ जाता है कि व्यक्ति परिवार में रहकर भी अकेलापन महसूस करता है। संबंधों के इस घुटन और अकेलापन को ज्ञानरंजन ने विशेष रूप से चित्रित किया है।

3.7.1. पति-पत्नी संबंध -

ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित पारिवारिक संबंध में प्रधान रूप से पति-पत्नी संबंध का चित्रण हुआ है। हर कहानी में पति-पत्नी के पारिवारिक संबंध अलग-अलग है। 'फेंस के इध और उधर' कहानी के आधुनिक पीढ़ी के पति-पत्नी छोड़कर हर कहानी में पति-पत्नी में अंतर्गत और बाह्य संघर्ष, तनाव एवं घुटन है। पति-पत्नी के विचारों में मेल नहीं है सिर्फ संबंध निभाने के लिए पति-पत्नी का रिश्ता रहता है।

'कलह' कहानी में पति-पत्नी के संबंध तनावपूर्ण हैं। स्वाति के पिता, स्वाति की माँ घर में होते हुए भी दूसरी स्त्री घर में लाना चाहते हैं। इसी कारण दोनों में संघर्ष है। स्वाति की माँ अपने पति का खुलेआम विरोध नहीं करती उसे अपनी पुत्री के विवाह की चिंता है। इस कारण वह अंदर-ही-अंदर घुटती जा रही है। दिन में घर को साफ सुथरा रखा जाता है, अतिथियों का अच्छा-खासा स्वागत होता है, सब समय पर खाना खाते हैं लेकिन रात में हमेशा पति-पत्नी में संघर्ष चलता है। वह पुत्री के लिए मर मिटने को तैयार है। वह पति से कहती है - "नहीं, नहीं। ऐसा नहीं होगा। तुम चाहे मेरा गला टीप दो। स्वाति सयानी हो गई है। उसकी जिंदगी मैं नहीं बरबाद होने दूँगी। तुम उसका विवाह कर दो।"[23] यहाँ यह स्पष्ट होता है कि पत्नी को ही अपने पुत्री के विवाह की चिंता है और पति निश्चिंत है, वह पत्नी को ही डाँटते हैं - "फूहड़ औरत, स्वाति कौन इस घर में अधिक दिन रहनेवाली है। कान खोलकर सुनो मैं उसे गेस्ट हाऊस में ही लाऊँगा। वो वहाँ नहीं रह सकती असभ्य बेपढ़ी।"[24] इस कारण दोनों के विचारों में मेल नहीं है, महज निभाने के लिए पति-पत्नी का रिश्ता है।

'फेंस के इधर और उधर' कहानी में आधुनिक विचारों के पति-पत्नी और पुराने विचारों के पति-पत्नी की तुलना करने का प्रयास किया है। आधुनिक विचारों के पति-पत्नी के विचारों में मेल है, अपनी पुत्री का विवाह होने पर हँसते-हँसते बिदाई देने वाले पति-पत्नी हैं। पुरानी विचारधारा के पति-पत्नी प्रत्यक्ष नहीं तो भी अप्रत्यक्ष रूप से उनके विचारों से लगते हैं दोनों भी एक विचार के होंगे।

'शेष होते हुए' कहानी में पति-पत्नी पुराने विचार के हैं। उपरी तौर पर दोनों में संघर्ष है लेकिन अंदर से एक ही विचार के हैं। दोनों को परिवार की और बेटे मझले के विवाह की चिंता है। कभी टिन्नू के द्वारा घर में आर्थिक नुकसान हो जाता है तो पिता क्रोधित हो जाते हैं तो उन्हें माँ समझाती है - ''अब जाने भी दो टीनू से खराब हो गया, शाम के वक्त इतना चिल्लाने से क्या फायदा।''[25] किंतु कभी-कभी पति किसी का विचार नहीं करता और क्रोधित होकर अपने-आपको कोसने लगता है - ''हाँ मैं चिल्लाता हूँ, खून-पसीना एक करके मैं जो कुछ जिंदगी भर जोड़ता रहा उस सब में आग लगा दो। मैं घर छोड़कर ही चला जाता हूँ, फिर जो चाहे करो।''[26] इससे स्पष्ट है कि पति विवशता के कारण घर छोड़कर जाने की बात करता है। लेकिन वहीं पति शांत हो जाने पर अपनी पत्नी से दिल खोलकर बात करता है - ''तुम क्या जानो मेरी छाती में हमेशा हाहाकार मचा रहता है। घर की हालत तुम देखती ही हो। जब भी बाहर निकलता ऐसा सोचता हूँ कि किसी शराब-खाने में घुस जाऊँ। पैर अंदर जाते-जाते रह जाते हैं।''[27] यहाँ स्पष्ट है कि ऊपरी तौर पर अपने पत्नी के प्रति क्रोधित दिखाई देनेवाले पति अंदर से कितने कोमल हैं। दोनों के विचार एक जैसे हैं।

'पिता' कहानी के पति-पत्नी में तनावपूर्ण संबंध है। सुधीर रात देरी से घर आता तो पत्नी सिर्फ 'आ गए' कहकर निश्चिंत सो जाती है। यहाँ पत्नी अपने पति के प्रति लापरवाह दिखाई देती है और पति विवश है जो अपनी पत्नी से डर रहा है कि पत्नी उठेगी तो कुछ घिसे-पिटे जटिल सवाल करेगी, इस कारण चुपचाप आकर सो जाता है। यहाँ स्पष्ट है कि दोनों के विचारों में मेल नहीं है।

'छलांग' कहानी में श्रीयुत ज्वेल अपनी पत्नी श्रीमती ज्वेल के साथ कम से कम समय बीता देते हैं। उन्हें अपनी पत्नी के प्रति दिलचस्पी है नहीं। वह कभी अपनी पत्नी के साथ प्यार भरी बाते नहीं करते इस कारण पत्नी अकेली है और अपने पड़ोसी कथानायक 'मैं' कि ओर आकर्षित होकर उसके साथ शरीर संबंध रखने का प्रयास भी करती है किंतु वक्त आने पर टाल देती है। दोनों पति-पत्नी में अंदर से घुटन है।

''मनहूस बंगला' कहानी में पति-पत्नी के संबंध सर्वसामान्य हैं। कथानायक 'मैं' पत्नी तारा को एक साल में दो बार दार्जिलिंग घुमने ले जाता है तो वहाँ एक संयुक्त परिवार की दो बहुएँ गरीबी के कारण अपने पति से दूर हैं ऐसा देखता है।

'यात्रा' कहानी में पति-पत्नी का प्रत्यक्ष संबंध नहीं है किंतु कथानायक 'मैं' के वाक्य से अर्थबोध होता है कि वह अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता है। पिता की मृत्यु हुई है और कथानायक रेल की यात्रा में अपनी पत्नी के बारे में सोचता है - ''कहीं उसे कुछ न हो जाय। वह पहली बार गर्भवती हुई है..... वह बहुत भावुक है और उसे दु:ख बहुत सताता है। गर्भपात भी हो सकता है ..... कौमुदी को कुछ होना नहीं चाहिए, मुश्किल से वह एक वर्ष पुरानी दुल्हन है।''[28]

'बहिर्गमन' कहानी में पति-पत्नी के टूटते संबंध का चित्रण है। पति को परदेस का आकर्षण है इस कारण वह अपनी पत्नी को जलील करके घर से बाहर निकाल देता है और परदेस जाता है - ''जिस दिन मनोहर ने सुधाको पहचानने से इन्कार कर दिया और उसे कमरे से बाहर निकाल दिया, उसी दिन से उसका भाग्य चमक उठा। उसे शीघ्र ही विदेश जाने का सुअवसर मिला।''[29]

'मृत्यु' कहानी के पति-पत्नी में संघर्ष है। कथानायक के वाक्य से ध्यान में आ जाता है कि पिता के द्वारा माँ को कठोर शासन मिलता था - ''क्योंकि माँ मेरे गंदे बदमाश बाप के लात घूसों से पहले मुक्ति पा चुकी थी और कोई स्मरणीय व्यक्ति मेरे पूर्व के जीवन में रहा नहीं था इसलिए जब घर की याद आती तो मुझसे और दूर हो जाता।''[30]

'हास्यरस' कहानी में प्रेम विवाहित पति-पत्नी हैं। कथानायक जब तक अपनी प्रेमिका के साथ विवाहित नहीं था तब तक खुश था। विवाह होने के तुरंत उसे लग रहा था कि वह फँस गया है। यहाँ स्पष्ट है कि कर्तव्य को लेकर जीवन के अंत तक उसे संभालना चाहिए था। तो वह कहता है - ''मुझे ख्याल आ रहा है, मेरी पत्नी जब वह पत्नी नहीं थी, मेरे दिल में थी। वह कभी थमती नहीं थी और हमेशा गेंद की तरह उछलती रहती थी।''[31] यहाँ पति की कायरता दिखाई देती है। वह अपनी पत्नी को प्रेमिका के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार है किंतु पत्नी के रूप में नहीं है।

'दांपत्य' कहानी पति-पत्नी के अर्थ का ही बोध करती है। पूरी कहानी में पति-पत्नी का ही चित्रण है। कहानी में किसी कारणवश पति-पत्नी में अंतर्गत संघर्ष है। उपर से दोनों एक-दूसरे से बोलते हैं किंतु अंदर से घुटन ही घुटन है। पत्नी को खुश करने के लिए पति रस्सगुल्ले लाता है जो खुद ही खा लेता है। यहाँ ध्यान में आ जाता है दोनों सिर्फ संबंध निभा रहे हैं।

उपर्युक्त अंतिम दो (हास्यरस और दांपत्य) कहानियों विषयक यदुनाथ सिंह का यह कथन है - '' 'हास्यरस' और 'दाम्पत्य' विवाह तथा दाम्पत्य की स्वीकृत मान्यताओं और परिकल्पित सुखद स्थितियों की पैरोड़ी-सी है। जो विवाह स्वीकृत अर्थ में प्रेम को एक निश्चित अर्थ और गांभीर्य प्रदान करता है, वह नए परिवेश और समय में एकदम अनिश्चित स्थिति में जी रहे युवा के मन में भय और आशंकाएँ उत्पन्न करके उसे हास्यरस का आवलंबन बना देता है। अबोध बालक-बालिकाओं की अरेन्जड़ मैरेज ओर इस लव मैरेज के नायक और नायिकाओं (पति-पत्नी) की मानसिकता की तुलना बड़ी दिलचस्प है। पत्नी की मानसिकता में कोई परिवर्तन आया प्रतीत नहीं होता जबकि पति का निर्दोष आंतरिक आल्हाद अब भय और बदलाव के कारण भी है और जीवन-विवेक के क्षितिज के विस्तार के कारण भी। इन कहानियों में बदले हुए परिवेश और समय का बोध बदली हुई संवेदना और सोच के माध्यम से होता है। कहानीकार भले ही दोनों चीजों को रिजेक्ट न करता हो, उनकी आस्यास्पदता का रस जरूर लेता है।''[32] इसी विषय को लेकर डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय कहते हैं कि - ''साठोत्तरी कहानीकारों ने यदि सबसे अधिक लिखा है तो पति-पत्नी के टुटते हुए संबंधों के बारे में, या दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जीवन के बदलते हुए संदर्भों में पति-पत्नी या कहना चाहिए स्त्री-पुरूष के नए संबंधों के बारे में।''[33]

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक संबंध में पति-पत्नी संबंधों को प्रमुखता दी है। उनकी कहानियों में पति-पत्नी के रिश्तों में विवशता, विचारों में अनमेल आदि कारणों से अंतर आ गया है, कहीं संघर्ष पैदा हुआ है तो कहीं तनावपूर्ण स्थिति निर्माण हुई है। कहीं पति अपना कर्तव्य निभाने के लिए पत्नी के साथ बात करता है तो कहीं दोनों के विचार एक समान हैं, यहाँ स्पष्ट है कि अधिकतर पति-पत्नी में तनावपूर्ण संबंध है।

3.7.2. पिता-पुत्र का संबंध -

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक संबंध में पिता-पुत्र संबंध का भी प्रमुख रूप से चित्रण हुआ है। पिता-पुत्र में तनाव, संघर्ष, अंतर द्वंद्व, पीढ़ियों के अंतर के कारण दोनों कें विचारों में मतभेद है। प्रल्हाद अग्रवाल कहते हैं - ''पुरानी पीढ़ी आगे सरकने को तैयार नहीं है और नई पीढ़ी पीछे मुड़ने में अपने आपको असमर्थ पाती है। वे सब एक-दूसरे से इतने दूर हैं कि उनका एक जगह एकत्रित होना बनावटी-सा लगता है। वे अंतरंग रूप से एक-दूसरे से नितांत अपरिचित हैं और सब अनचाहे बेबसी से बेधे हुए एक-दूसरे से मुक्त होने के लिए छटपटा रहें हैं। आपस में सामना करते हुए भी उन्हें भय महसूस होता है।''[34] पिता के पुराने विचार और पुत्र के आधुनिक विचार में अंतर है इस कारण दोनों में संघर्ष निर्माण होता है। कई जगह पिता संबंध निभाने के लिए अपने पुत्र के साथ बात करता है। हर कहानी के पिता-पुत्र के साथ कठोरता से पेश आ जाते हैं भले ही अंतरमन से न हो। लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय लिखते हैं - ''पीढ़ियों का संघर्ष इस स्वातंत्र्योत्तर काल में एक प्रमुख समस्या रही है। यह एक संस्कृति का युग था, जिसमें पुराने प्रतिमान टूट रहे थे और नए मूल्य उभर रहे थे। पुरानी पीढ़ी अविश्वास और विचित्र आशंका से इस नई पीढ़ी, नए उभरने वाले मूल्यों और आधुनिकता की नवीनतम प्रवृत्तियों को देख रही थी और नई पीढ़ी की ओर पुराने प्रतिमान रूढ़ और अव्यावहारिक प्रतीत हो रहे थे।''[35]

'शेष होते हुए' कहानी में पिता-पुत्र में अंतर्गत संघर्ष है। पिता को अपने छोटे बेटे मझले के विवाह की चिंता है क्योंकि बड़ा बेटा अलग मकान बनवा रहा है। मझला छुट्टियों में घर आता है तो पिता भी संबंध निभाने जैसी बाते करते हैं - ''लगता है आज तो गाड़ी समय पर आयी।''[36] यहाँ स्पष्ट होता है कि पिताजी विवश होकर बोल रहे हैं, यह मझले को बुरा लगता है। यहाँ दोनों के रिश्तों में अंतर आ गया है।

'पिता' कहानी का मूल उद्देश्य ही पिता-पुत्र का संघर्ष है। सुधीर के पिता पुराने आचार-विचार, रहन-सहन के है। वे पहनावा भी पुराने तरीके से पहनते हैं। पिता को कभी परिवार के सदस्य ने अच्छे कपड़े पहनने को कहा तो वे नहीं मानते, कहते हैं - ''मैं सबको जानता हूँ, वही म्यूनिस्पिल मार्केट के छोटे-मोटे दर्जियों से काम कराते और अपना लेबल लगा लेते हैं। साहब लोग मैंने कलकत्ते के 'हाल एण्डरसन' के सिले कोट पहने हैं अपने जमाने में जिनके यहाँ अच्छे-खासे यूरोपियन लोग कपड़े सिलवाते थे। ये फैशन-वैशन जिसके आगे आप लोग चक्कर लगाया करते हैं उसके आगे पाँव की धूल है, मुझे व्यर्थ पैसा खर्च नहीं करना

है।''[37] यहाँ पुत्र के नए आचार-विचार और पिता के पुराने आचार-विचार में तालमेल नहीं बैठता इस कारण दोनों में संघर्ष है।

'संबंध' कहानी में कहानीकार ने पिता का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप में दिखाया है। कथानायक के अनुसार - ''यह बात दूसरी है कि बचपन में पिता की बलिष्ठ मुट्ठी में पकड़े और बेत से बेतहाशा पीटे जाने के वक्त केवल माँ के आने की ही प्रतिक्षा होती थी।''[38] यहाँ पिता कठोर दिखाई देता है।

'क्षणजीवी' कहानी में पिता-पुत्र के बीच संघर्ष है। कहानी का कथानायक अपने पिता द्वारा भेजी गई मनिऑर्डर का इंतजार करता है, जो उसे मिलना जरूरी है किंतु आज तक मिला नहीं। उसके पास पैसा नहीं है इस कारण उसे पिता के प्रति क्रोध आता है और आपे से बाहर होकर वह पिता के मृत्यु की ईश्वर से प्रार्थना करता है। वह कहता है - ''मुझे अपने बूढ़े बाप की उम्मीद पर बड़ा क्रोध आ रहा है। भगवान यह बुड्ढ़ा मर ही जाय, मैंने सोचा कि मान लो कल रात उसे खांसी उठी हो और उसने दम तोड़ दिया हो, थोड़ी देर बाद घर पहुँचने पर मुझे मौत का निर्दयी तार मिले, फिर ? मैं बहुत भयभीत हो गया हूँ।''[39] यहाँ आर्थिक परिस्थितियों के कारण पुत्र अपने पिता के मृत्यु की कामना करता है।

'यात्रा' कहानी में पिता-पुत्र के बीच तनाव है। पिता के मृत्यु की तार पाकर कथानायक गाँव की ओर आते वक्त आफिस में यह बताना उसे लज्जास्पद लग रहा है कि छुट्टी वह पिता की मृत्यु के कारण लेना चाहता है। कथानायक की बचपन की याद से मालूम होता है कि पिता का व्यवहार हमेशा कठोर रहा होगा इसी कारण आज उनकी मृत्यु होने पर कुछ भी दु:ख नहीं हो रहा। कथानायक कहता है - ''घर के सब बच्चे, बचपन में लाल निकर पहन कर कबड्डी खेला करते थे। 'वे' (पिता) हमेशा ही रेफरी हुआ करते और सीटियाँ बजाते थे।''[40] यहाँ पिता के कठोर स्वभाव और पुत्र का सीमित विचार दिखाई देता है।

'बहिर्गमन' कहानी में पिता-पुत्र में अपनापन है। पिता का कर्तव्य होता है कि अपने पुत्र को सही मार्ग पर लगाना। उसके लिए किसी के पाँव भी पकड़ने के लिए तैयार होते हैं। कथानायक के पिता अपने पुत्र को नौकरी पाने के लिए सोमदत्त को गिड़गिड़ाकर पत्र लिखते है। पिता अपने पड़ोसी सोमदत्त की प्रगति देखकर अपने बच्चों को सुधारने का प्रयास करता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पिता-पुत्र के बीच संघर्ष है। 'बहिर्गमन' और 'शेष होते हुए' को छोड़कर हर कहानी के पिता-पुत्र में संघर्ष और घूटन है। कई जगह विचारों में तालमेल नहीं है। कई जगह आर्थिक समस्या के कारण भी दोनों पीढ़ियों के बीच संघर्ष है। पीढ़ियों का संघर्ष हमेशा चलता है और रहेगा। लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय कहते हैं - "इस काल की एक और समस्या दो पीढ़ियों का संघर्ष है। दो पीढ़ियों का संघर्ष कोई नई बात है, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता। 'वार ऑफ जेनेरेशन्स' हमेशा रही है और रहेगी। किंतु आलोच्य काल में यह संघर्ष जितना तीव्र और स्पष्ट है उतना पहले कभी नहीं था। आज के युग में पुराने प्रतिमान बड़ी तेजी के साथ ढ़ह पड़े हैं और पुरानी पीढ़ी अविश्वासू और विचित्र आशंका से नई पीढ़ी नए उभरनेवाले मूल्यों और आधुनिकता की नवीनतम प्रवृत्तियों को देख रही है और नई पीढ़ी को सारे पुराने प्रतिमान रूढ़ और अव्यवहारिक प्रतीत हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में दोनों पीढ़ियों में संघर्ष होना स्वाभाविक था जिसका अंत पुरानी पीढ़ी की पराजय में ही हो सकता है, क्योंकि सभी कहानीकार नई पीढ़ी के थे और वे अपनी पीढ़ी के विचारों एवं आदर्शों का सार्थकता तथा उपयोगिता किसी न किसी प्रकार सिद्ध करना चाहते थे।"[41]

3.7.3. पिता-पुत्री का संबंध -

भारतीय समाज में स्त्रियों का जीवन दो जगह बीत जाता है। विवाह से पूर्व वह अपने माता-पिता के घर में रहती है और विवाह के बाद वह अपने पति के घर में रहती है। साधारण तौर पर लड़कियों का अपने माता-पिता के घर में जीवन सुखी होता है। ज्ञानरंजन की कहानियों में पिता-पुत्री संबंध अलग-अलग है। कई जगह पुत्री आधुनिकता से प्रभावित होने के कारण दोनों में तनाव उत्पन्न होता है, तो कई जगह पिता अपनी पुत्री के प्रति सहज या निश्चिंत दिखाई देता है।

'कलह' कहानी में पिता-पुत्री में अंतर्गत संघर्ष है। स्वाति के पिता परिवार में स्वाति की माँ होते हुए और ब्याहने योग्य पुत्री के होते हुए भी अपने लिए दूसरी स्त्री घर में लाना चाहता है। पिता अपनी पुत्री के भविष्य की कोई चिंता नहीं करता और पुत्री पिता का विरोध नहीं कर सकती। पुत्री के मन में घुटन है।

'फेंस के इधर और उधर' कहानी में पुराने और आधुनिक आचार-विचारों के परिवारों की तुलना है। कहानी में आधुनिक विचार का पिता अपनी पुत्री के साथ मित्र के समान हँसी-मजाक करता रहता है।

तो पुराने विचारधारा के पिता-पुत्री के बिदाई के समय रोना जरूरी समझ रहे हैं। पड़ोस की लड़की की बिदाई देखकर उन्हें अच्छा नहीं लगता वे कहते हैं - ''पहले जमाने में लड़कियाँ गाँव की हद तक रोती थी जो नहीं रोती उन्हें मार कर रूलाया जाता था।''[42] यहाँ पुरानी परंपरा और आधुनिक समाज की मान्यताएँ कैसी हैं इसका सुंदर चित्रण हुआ है।

'शेष होते हुए' कहानी में पिता-पुत्री के बीच संघर्ष है। तारा आधुनिकता से प्रभावित है वह विश्वविद्यालय में पढ़ती है। वह अपनी सहेलियों के साथ घर में हँसी मजाक करती है किंतु पिता को यह अच्छा नहीं लगता पिता क्रोधित होकर कहते हैं - ''खुब है भई चार घंटे हो गए गुलछर्रे उड़ाते हुए किसी घर में ऐसा नहीं देखा।''[43]

'चुप्पियाँ' कहानी में पिता-पुत्री के बीच अपनापन है। विचार करने की बात यह है कि मिन्नो कथानायक के फूफा और फूफी की अपनी खूद की संतान नहीं है किंतु दूर के रिश्ते की यतीम लड़की को अपनी सगी पुत्री मानकर उसका पालन-पोषण करते हैं। यहाँ उनका अपनी पुत्री विषयक प्रेम दिखाई देता है। पुत्री मिन्नो भी उन्हें अपने सगे माता-पिता मानती है।

'मनहूस बंगला' कहानी में पिता-पुत्री का अप्रत्यक्ष संबंध है किंतु पुत्री के कार्य से लगता है कि उस पर पिता का दबाव था। क्योंकि जब तक उसके पिता जीवित थे तब तक वह घर से बाहर नहीं निकलती थी किंतु पिता की मृत्यु के तुरंत ही वह किसी हॉटेल वेटर के साथ शहर भाग जाती है। यहाँ पिता का पुत्री पर दबाव दिखाई देता है।

'रचना-प्रक्रिया' कहानी में पिता-पुत्री के बीच संघर्ष है। पिता हमेशा बेटी का भला ही सोचता है। पिता को मालुम हो जाता है कि पुत्री किसी युवा लड़के के साथ प्रेम करना चाहती है तो पिता उसे नकार देते हैं क्योंकि लड़की कम उम्र की है। यहाँ दोनों भी आधुनिक विचारों के हैं इस कारण पुत्री अपने मन की बाते खुले दिल से पिता को बता देती है और पिता भी सुनता है।

'गोपनीयता' कहानी में पिता-पुत्री में प्रेमभाव दिखाई देता है। 'क्षणजीवी' कहानी में पिता अपनी पुत्री का विवाह करने में असमर्थ है ऐसा संकेत होता है। 'यात्रा कहानी में कथानायक अपने पिता की मृत्यु

की तुलना में अपनी छोटी बच्ची कौमुदी को खुश रखने की ईश्वर से प्रतिज्ञा करता है। यहाँ यह विदित होता है कि पिता अपनी पुत्री से प्रेम करता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पिता-पुत्री संबंध में तनाव है, तो कई जगह पिता-पुत्री पर पुराने विचार लाद रहा है और उसके कर्तव्य के प्रति असमर्थ है, तो कभी अपनी छोटी पुत्री के प्रति बहुत प्यार भी करता है। पिता-पुत्री के बीच कहीं अपनापन तो सख्त कड़ाई का रूख है।

3.7.4. माता-पुत्र संबंध -

माता विश्व में सबसे श्रेष्ठ होती है। माता ही बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करती है। दोनों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम होता है किंतु आज के युग में माता-पुत्र के बीच अजनबीपन बढ़ रहा है। पुत्र अपनी माँ को माँ कहने की लज्जा मान रहा है। माँ भी संबंध निभाने के लिए पुत्र के साथ ऐसा ही कुछ व्यवहार कर रही है। उन्हें विषम परिस्थितियों ने इतना जकड़ ड़ाला है कि वह बाहर आने की कोशिश करके भी आ नहीं सकते। ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में इसी का यथार्थ चित्रण किया है। हर कहानी की माँ अपनी संतान के भविष्य से चिंतित है फिर भी कभी-कभी माता-पुत्री में तनाव निर्माण हो जाता है। लेकिन कोई कहानी ऐसी नहीं है जिस में माता अपने पुत्र के प्रति कठोर हो आयी है।

'शेष होते हुए' कहानी में माता-पुत्र में प्रेमभाव है। कथानायक मझला छुट्टियों में घर आता है, तो परिवार में माँ के सिवा अन्य सदस्य उसके साथ बात नहीं करते सिर्फ माँ बोलती है - "कितने काले होते जा रहे हो तुम ? शीतल से भी ज्यादा। जब पैदा हुए थे तो गेहुआँ रंग था तेरा।"[44] यहाँ माँ की अपने पुत्र के प्रति ममतापूर्ण सूक्ष्म दृष्टि दिखाई देती है। फिर भी मझले का बड़ा भाई माँ को कुड़ाकचरा समझकर बात करता है।

'दिलचस्पी' कहानी में माता-पुत्र का सामान्य संबंध है। मुकुल की माँ को अपने बेटे के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बताने की आदत है। कभी पुत्र की अनुपस्थिति में घटित घटनाओं को बेटा घर पहुँचते ही माँ उसे बता देती है - "सामबहादूर फौज में चला गया है मुकुल और अब घर में काम-काज की बहुत दिक्कत हो गई है, और हाँ, तुम नहीं होगे सामने के घोष बाबू बेचारे गुजर गए। बड़े भले आदमी थे राम-राम।"[45] इससे स्पष्ट हो जाता है माता अपने पुत्र से बहुत प्यार करती है।

'संबंध' कहानी में माता-पुत्र में अंतर्गत संघर्ष है। बाह्य रूप से सरल दिखाई देने वाले पुत्र को अपनी माँ को माँ कहते शर्म आती है - "एक लंबे समय तक जो स्त्री मेरे लिए केवल माँ थी अब कभी-कभी ही माँ लगती है या माँ का भ्रम।"[46] यहाँ माता-पुत्र के रिश्तों में अंतर दिखाई देता है। किंतु वही माँ छोटे बेटे के पीछे नाष्ता और चाय लेकर चलती है यहाँ माँ की विवशता दिखाई देती है। दोनों पुत्र अपनी माँ को समझने में असफल हो गए हैं।

'अमरूद का पेड़' कहानी में माता-पुत्र के बीच प्रेमभाव है। जब पुत्र नौकरी के लिए घर छोड़कर निकलता है तो माँ रोती है। कथानायक कहता है - "माँ की याद इसलिए क्योंकि वह दुर्बल है और हम लोगों को न समझ पाकर क्रमशा जड़ होती जा रही है और अमरूद की इसलिए कि उसके माध्यम से मैं अपने अंदर एक जागृति का भान करता रहा।"[47]

'याद और याद' कहानी में माता-पुत्र का सर्वसामान्य संबंध रहा है। कथानायक माँ के विषय में कहता है - "अम्मा की उबलती हुई याद। अम्मा जो दु:ख से लद गई, अम्मा जो अभागी मर गई। उसकी धसी आँखों पर हमेशा चढ़ी रहनेवाली पतीली छल-छलाहट कब्र सी सूनी दृष्टि, ढ़हती मुस्कान और कंपित काया हमेशा के लिए सो गई।"[48] यहाँ माँ को कितना दु:ख था यह समझ में आ जाता है। माँ प्रेमल थी इसी कारण आज भी पुत्र याद करता है।

'यात्रा' कहानी में भी माता-पुत्र का अप्रत्यक्ष संबंध है। पुत्र का अपने पिता से अधिक माँ पर प्रेम दिखाई देता है। पिता की मृत्यु होने पर भी उसे रोना नहीं आता किंतु पहले माँ की एक्स-रे प्लेट देखकर रोया था, वह कहता है - "उस दिन माँ का एक्स-रे प्लेट और रिपोर्ट लेने मैं जेकक्स क्लिनिक गया था। गनीमत कि डॉक्टर के चेंबर में नहीं रो दिया। तबियत घबड़ाई हुई थी और साइकिल काबू से बाहर हो जाती थी। थोड़ी देर के लिए शरीर कंप से भर गया और दाँत किटकिटाने लगे। घोष मार्केट के पीछे पेशाबखाने में मैं रोकर, चेहरा पोंछ -पोंछ कर निकला।"[49]

'हास्यरस' कहानी में माता-पुत्र में सहज संबंध है। कथानायक प्रेम विवाह करने के बाद असफल महसूस करता है। उसे अपने साथी और पत्नी शत्रू लग रहे हैं। इसी समय उसे अपनी माँ और शहर की

याद आ रही है - "वैसे सबसे ज्यादा मुझे अपने शहर की और माँ की याद आ रही है।"[50] यहाँ स्पष्ट है कि कम से कम संकट के समय तो माँ की याद आ जाती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ज्ञानरंजन की कहानियों में चित्रित माता-पुत्र संबंध में माता अपने पुत्रों के भविष्य की चिंता करती है किंतु कई जगह पुत्र माँ के प्रति कठोरता से पेश आता है। कहीं दोनों में सामान्य संबंध भी है। तो कहीं माता-पुत्र के बीच रिश्तों में दूरी आई है।

3.7.5. माता-पुत्री संबंध -

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक जीवन के अंतर्गत माता-पुत्री संबंध का यथार्थ चित्रण हुआ है। आधुनिकता के प्रभाव के कारण माता-पुत्री के बीच तनाव, कहीं विचारों में असामान्यता तो कहीं सामान्यरूप दिखाई देता है। बिदाई में पुत्री का रोना जरूरी समझनेवाली माँ भी है। माता-पुत्री में अंतर्गत और बाह्य संघर्ष दिखाई देता है।

'कलह' कहानी में माता-पुत्री के बीच अंतर्गत संघर्ष है। स्वाति की माँ को उसके विवाह की चिंता है, उसे ड़र है कि परिवार में दूसरी स्त्री आ गई तो परिवार में अव्यवस्था होगी फिर भी पति का विरोध नहीं करती, यहाँ स्वाति माँ को दोष देती है कि माँ पिता का खुलेआम विरोध क्यों नहीं कर पाती। वह अपने आप से कहते है - "माँ भी कितनी अपाहिज और मूर्ख है, स्वाति झुँझला गई। राजे ऐसा करता तो मैं उसको मार ड़ालती।"[51] यहाँ पुत्री अपनी माँ की कमजोरी नहीं समझ सकी है। स्वाति आधुनिक विचारों से प्रभावित होने के कारण ऐसा कहती है और पुत्री स्वाति का माँ को मूर्ख समझना गलत है क्योंकि माँ स्वाति के विवाह की चिंता के कारण पति का विरोध नहीं करती।

'फेंस के इधर और उधर' कहानी में माता-पुत्री संबंध सामान्य दिखाई देते हैं आधुनिक विचारों की माँ पुत्री के साथ सहेली समान रहती है। उसकी शादी होने पर हँसते-हँसते बिदाई देती है, किंतु पुत्री का बिदाई समय रोना जरूरी समझने वाली पुरानी पीढ़ी की माँ कहती है - "आजकल सभी ऐसे होते हैं पेट काटकर जिन्हें पालो-पोसो उन्हीं के आँखों में दो बूँद आँसू नहीं।"[52] कहानी में दो माताओं का पुत्री के प्रति

अलग-अलग दृष्टिकोण है। आधुनिक विचारों की माता भावना को अधिक महत्त्व नहीं देती लेकिन पुरानी पीढ़ी की माँ स्नेह भाव को आवश्यक समझती है।

'शेष होते हुए' कहानी में माता-पुत्री के बीच संघर्ष है। तारा आधुनिक विचारों से प्रभावित है इस कारण उसे लगता है घर के सामने बगीचा लगाया जाय, वह परिवारे के सभी के साथ माँ को भी कंजूस कहती है - "पोदीना बो रखा है। इतनी जमीन पड़ी है, यह नहीं कि एक माली रखकर क्या करेंगे, उससे तो लोग और बीमार रहते हैं।"[53] यहाँ स्पष्ट होता है कि पुत्री अपने परिवार का परिवेश भूल्कर आधुनिकता के प्रभाव से माँ को टोकती है। वर्तमान युग की नए विचार की पुत्री और पुराने विचार की माँ दोनों के विचारों में खाई है।

'चुप्पियाँ' कहानी में माता-पुत्री के संबंध साधारण है। एक अनाथ लड़की है जिसे कथानायक के फूफा-फूफी अपनी बेटी मानकर पालन करते हैं। यहाँ ध्यान में आता है कि अनाथ लड़की के प्रति फूफी ने सगी बेटी के समान प्यार किया है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि माता-पुत्री के बीच संघर्ष है। कहीं माता की विवशता पुत्री नहीं समझ रही है तो कहीं माता-पुत्री में सामान्य संबंध है किंतु प्रधानरूप से पुत्रियों पर आधुनिकता के विचार का प्रभाव है।

3.7.6. भ्रातृत्व संबंध -

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक संबंध में भ्रातृत्व संबंध का भी चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों में भाइयों में प्रधान रूप में संघर्ष दिखाई देता है, तो गौण रूप में प्रेमभाव दिखाई देता है। आर्थिक तनाव, व्यक्तिवाद की भावना, प्रेम में खाई है। बेरोजगारी से विवश होकर बड़ा भाई छोटे भाई का मर जाना ठीक समझ रहा है।

'शेष होते हुए' कहानी में भाई-भाई के बीच प्रेम में खाई दिखाई देती है। मझला छुट्टियों में घर आता है तो बड़ा भाई संबंध निभाने के लिए पूछता है - "क्यों कब आए ?..... अरे मुझे पता नहीं चला चलो अच्छा हुआ। सब ठिक-ठाक चल रहा है।"[54]

'पिता' कहानी में भ्रातृत्व संबंध सामान्य है। पिता बड़े भाई के साथ कठोरता से व्यवहार करते हैं तो छोटा सुधीर नाराज हो जाता है। दोनों एक-दूसरे के दु:ख में शामील हो जाते हैं।

'संबंध' कहानी में भ्रातृत्व संबंध में अंतर्गत संघर्ष है। बेरोजगारी से त्रस्त छोटा भाई बड़े भाई को बोझ लग रहा है, इस कारण वह कहता है - "हे ईश्वर, अगर वह मर गया यद्यपि एक पल के लिए मैं हिल भी जाता हूँ तो सब कुछ कितना ढ़ीला और सुखद हो जायेगा।"[55] यहाँ बड़े भाई की विवशता है।

'अमरूद का पेड़' कहानी में भ्रातृत्व संबंध में घुटन है। 'मनहूस बंगला' और 'गोपनीयता कहानियों में भ्रातृत्व संबंध सर्व सामान्य है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि ज्ञानरंजन की कहानियों में भ्रातृत्व संबंध में संकुचित दृष्टि है। कहीं भाइयों में एक विचार है किंतु प्रधान रूप में दोनों में संघर्ष अधिक है।

3.7.7. भाई-बहन संबंध -

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक संबंध में भाई-बहन संबंध का भी चित्रण हुआ है। दोनों में सामान्य संबंध है। कई जगह बहन अपने भाई के साथ मित्र के समान रहती है, तो कई भाई से बढ़कर अपने प्रियकर को अधिक महत्त्व देती है।

'सीमाएँ' कहानी में भाई-बहन संबंध मित्र के समान हैं। विवेक के प्रेम विवाह को माता-पिता नकारते हैं तो उसकी बहन सविता एक मित्र समझकर उसका साथ देती है, किंतु अंत में यही बहन भाई से बढ़कर अपने प्रियकर राजे को अधिक महत्त्व देती है। यह उसके पत्र से अभिव्यक्त होता है। यहाँ बहन की व्यक्तिवाद की भावना दिखाई देती है।

'दिलचस्पी' कहानी में भाई-बहन मित्र जैसे रहते हैं। मुकुल छुट्टियों में घर आता है तो उसकी बड़ी बहन उसके साथ मित्र की तरह बात करती है - "ओहो भैया जी हैं। इतनी जल्दी कब से उठने लगे हैं आप जनाब ?"[56]

'क्षणजीवी' कहानी में भाई-बहन संबंध में विवशता है। बहन का विवाह करने में असमर्थ भाई अपनी काली-कुल्टी बहन को गालियाँ देता है। वह अपनी बहन को विवश होकर दोष देता है कि वह किसी लड़के

के साथ प्यार क्यों नहीं करती - "लेकिन मैं सोचता हूँ कि मेरी बहन किसी से प्रेम करके अपनी शादी की सस्ती मन माफिक व्यवस्था क्यों नहीं कर लेती ? सनी बिल्कुल कलाहीन है। उस कम्बख्त का किसी से प्रेम नहीं है।"[57] यहाँ भाई आर्थिक परिस्थितियों के कारण विवश होकर अपनी बहन से किसी से प्यार करने की चाहत रखता है।

'मनहूस बंगला', 'गोपनीयता', 'अमरूद का पेड़' और 'चुप्पियाँ' कहानियों में भाई-बहन संबंध सर्व सामान्य दिखाई देते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से कह सकते हैं कि भाई-बहन का रिश्ता अत्यंत सहज, स्वाभाविक, अनुभव होता है। कभी दोनों में विवशता के कारण अंतर्गत संघर्ष है। वे एक दूसरे को जितनी अच्छी तरह से समझते हैं उतने और कोई नहीं।

3.7.8. सास-बहू संबंध -

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक जीवन के अंतर्गत 'शेष होते हुए' कहानी में सास-बहू संबंध का चित्रण हुआ है। सास को अपने घर में चाय बनाने का भी अधिकार नहीं है। कभी बनाती है तो बहू कहती है - "चाय बनाई जाय या खाना। दस बजे महारानी यूनिवर्सिटी जाएगी, उन्हें नौ बजे खाना चाहिए। यहाँ अभी तीसरी बार चूल्हें पर चाय का अदहन चढ़ा है।"[58] यहाँ बहू अपनी सास, पति, ननंद तीनों को टोकती है।

'मनहूस बंगला' कहानी में सास-बहू संबंध सर्व सामान्य हैं।

3.7.9. देवर-भाभी संबंध -

ज्ञानरंजन की कहानियों में 'शेष होते हुए' कहानी में देवर-भाभी संबंध का चित्रण हुआ है। मझला छुट्टियों में घर आता है तो भाभी उससे बात नहीं करती वह अपने-आप में व्यस्त है। यहाँ देवर-भाभी के बीच हँसी मजाक का जो संबंध होता है या बड़ी भाभी माँ के समान मानी जाती है यहाँ दिखाई नहीं देता।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि परिवार में पारस्पारिक संबंधों में व्यक्तिवाद की भावना, विषम परिस्थितियाँ, वैयक्तिक विचार स्वतंत्रता, आर्थिक समस्या, अविश्वास आदि के कारण अंतर आ रहा है। कहीं उपर से संबंध में तनाव दिखाई देता है लेकिन अंदर से मजबूत है। कहीं विवशता, आधुनिकता दिखाई देती हैं।

जिस परिवार में आर्थिक समस्या है उस परिवार में परस्पर संघर्ष है। अर्थात संयुक्त परिवार में पारस्पारिक संबंध में संघर्ष है, विभक्त परिवार में न के बराबर है।

3.8. परिवार विघटन -

परिवार विघटन उस प्रक्रिया को कहते हैं जो परिवार में विघटन उत्पन्न करती है। क्लेश, तनाव, लालसा आदि के कारण परिवार विघटित होता है। जब परिवार में संबंधों में सामंजस्य एवं संगठन का लोप हो जाता है तो भी परिवार विघटित हो सकता है। रामबिहारीसिंह तोमर कहते हैं - "किसी प्रकार का भी कटु संबंध या तनाव जो पति-पत्नी, माता-पिता एवं बच्चों के बीच पाया जाता है उसे पारिवारिक विघटन कहते हैं। परिवार के सदस्यों में किसी भी प्रकार का अनबन या मनमुटाव पारिवारिक विघटन कहलाता है।"[59]

ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक विघटन का चित्रण दिखाई देता है। उनकी 'कलह', 'शेष होते हुए', 'पिता', 'संबंध', 'अमरूद का पेड़' तथा 'मनहूस बंगला' आदि कहानियों में पारिवारिक विघटन का चित्रण दिखाई देता है। अतुलवीर अरोड़ा कहते हैं - "ज्ञानरंजन की कहानियों में मुख्यत: मध्यवर्ग में शिक्षित जन के संस्कारों और सांस्कृतिक चोचलों पर चोट की गई है और संबंधों की दुनिया को शहरीकरण अथवा महानगरीय तनावों की जटिलता के साथ विघटन की प्रक्रिया पर अंदरूनी और बाह्य दोनों स्तरों पर घटाया गया है।"[60]

ज्ञानरंजन की 'शेष होते हुए' कहानी में पारिवारिक विघटन का चित्रण दिखाई देता है। कथानायक मझले का संयुक्त परिवार है। उसके परिवार के सभी सदस्य अलग-अलग कमरे में रहते हैं और अलग-अलग समय में खाना खाते हैं। कोई नई चीज लाने पर आपस में बाँट लेते हैं। परिवार में हमेशा घुटन युक्त वातावरण रहता है। पिता हर समय किसी पर भी टूट पड़ते हैं। माता का हर शब्द मझले के दिल को लगता है। मझले के माता-पिता में हमेशा झगड़ा होता रहता है। कहानीकार कहता है - "मझले ने देखा, एक ही घर में कई घर हो गए हैं। हर व्यक्ति के कमरे एक दूसरे से अलग। एक स्वतंत्र और पृथकता ज्ञापित करनेवाला स्वभाव है। निजी व्यवस्था की प्रवृत्ति कुछ लोगों में छोटे पैमाने पर अंदर-ही-अंदर प्रयत्नशील है।"[61] यह विघटन व्यक्तिवाद की भावना और आर्थिक समस्या के कारण हुआ है यह दिखाई देता है।

'अमरूद का पेड़' कहानी में संयुक्त परिवार विघटित हो रहा दिखाई देता है। कथानायक 'मैं' पढ़ता है और परिवार में सिर्फ बड़ा भाई कमाता है, तो उसकी व्यक्तिवाद की भावना बढ़ जाती है। इस कारण वह परिवार से अलग रहना चाहता है इसका कहानी में संकेत मिलता है। कथानायक 'मैं' कहता है - "पिता जी ने एक बार यह भी लिखा कि 'सबसे बड़े भाई चूल्हा-चौका अलग करने के लिए एक तनाव पैदा कर रहे हैं। बड़ी चखचख है। बहू ताजी रोटियाँ तो खुद खा जाती है और बासी हम लोगों के लिए रख देती है।"[62]

'मनहूस बंगला' कहानी में संयुक्त परिवार विघटित हो रहा दिखाई देता है। यहाँ विचारों-आचारों की स्वतंत्रता न मिलने के कारण परिवार विघटित हो रहा है और साथ ही आर्थिक समस्या भी है। रायबहादुर परिवार का मुख्य कर्ता है। उसकी मृत्यु होते ही उसके दोनों पुत्र अपनी-अपनी पत्नियों को लेकर शहर की ओर गए हैं और पुत्री किसी हॉटेल वेटर के साथ भाग गई है। जब तक परिवार में दबाव था परिवार एकत्र था, दबाव समाप्त होते ही परिवार बिखर गया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट है कि ज्ञानरंजन की कहानियों में परिवार विघटित हो रहे दिखाई देते हैं। उसमें आर्थिक समस्या मुख्य कारण है और साथ ही व्यक्तिवाद की भावना, पारिवारिक क्लेश, अविश्वास आदि भी महत्त्वपूर्ण कारण हैं।

3.9. रिश्तों में अंतर -

आज के वर्तमान युग में परिवार में अजनबीपन, परायापन की भावना जिस प्रकार बढ़ रही है उसी प्रकार पारिवारिक रिश्तों में अंतर बढ़ रहा है। ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों में अंतर आया हुआ दिखाई देता है। 'कलह' कहानी की स्वाति विवशता के कारण अपनी माँ को अपाहिज और मूर्ख कहती है। यहाँ माता-पुत्री के रिश्तों में अंतर आया हुआ दिखाई देता है। 'संबंध' कहानी में बड़ा भाई छोटे भाई का मरना ठीक समझ रहा है। वास्तव में बड़े भाई का कर्तव्य होता है कि वह छोटे भाई का पालन करें, लेकिन परिस्थितियों के कारण यहाँ भाई-भाई के प्रेमल रिश्तों में अंतर आया दिखाई देता है। 'यात्रा' कहानी में पिता की मृत्यु पर सैनिक में नौकरी करनेवाला पुत्र गाँव जा रहा है। उस समय रेल में पिता के मृत्यु का दु:ख होने की बजाय अपनी छोटी पुत्री और पत्नी की याद आती है। यहाँ भी व्यक्तिवाद के कारण ही रिश्तों में अंतर आया हुआ दिखाई देता

है। 'क्षणजीवी' कहानी का कथानायक 'मैं' पिता द्वारा भेजी मनिऑर्ड़र को देर होने के कारण पिता को गालियाँ देता है। यहाँ आर्थिक समस्या के कारण पिता के प्रति पुत्र का आदरभाव का रिश्ता दूर रह चूका है।

इस प्रकार ज्ञानरंजन की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों में आया हुआ अंतर दिखाई देता है। परिवार में पुराने विचारों, विवशताओं, विषम परिस्थितियों, व्यक्तिवाद की भावनाओं तथा आर्थिक समस्या के कारण रिश्तों में अंतर आया हुआ दिखाई देता है। पुष्पपाल सिंह कहते हैं - ''संबंधों के विघटन की सही और सच्ची तसवीर नई कहानी के बाद समकालीन कथा-दौर में ही मिली, जहाँ इन संबंधों की निर्मम पड़ताल की गई है। इस दृष्टि से ज्ञानरंजन की कहानियाँ सबसे पहले हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। जिन्होंने टूटते पारिवारिक संबंधों को अत्यंत सूक्ष्मता से अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। 'कलह', 'शेष होते हुए', 'पिता', 'संबंध', 'फेंस के इधर और उधर' आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियों में रीतते-बूझते और चूक गए संबंधों तथा उससे उबला पीड़ा का तीव्र अहसास कराया गया है।''[63]

3.10. टूटते दांपत्य संबंध -

वर्तमान युग में दाम्पत्य संबंध में तनाव, अविश्वास और संघर्ष दिखाई देता है। उनके जीवन में सुख की जगह संशय और तनाव आ गया है। इसी विवशता और बेबसी का चित्रण ज्ञानरंजन की कहानियों में दिखाई देता है। अमिताभ वेदप्रकाश कहते हैं - ''कुछ कहानियों में दाम्पत्य जीवन के ऐसे टुकड़ो को उठाया गया है जो ऊपर से देखने पर सामान्य से अधिक नहीं हैं, लेकिन उनमें छिपी हुई तल्खी, असहायता, क्रुरता और बेबसी की संवेदनाएँ उन्हें विशिष्ठ बना देती है।''[64]

ज्ञानरंजन की 'कलह' में स्वाति के पिता स्वाति की माँ घर में होते हुए भी दूसरी स्त्री घर में लाना चाहते हैं। इस कारण दोनों में संघर्ष है। दांपत्य संबंधों के खोखलेपन व विसंगतियों को उदघाटित करने में ज्ञानरंजन सिद्धहस्त हैं। ज्ञानरंजन की 'हास्यरस' स्वयं में कुछ मनोविज्ञान का घुट लिए दाम्पत्य संबंधों की व्यंग्यात्मक शैली में जाँच-पड़ताल करती है। 'हास्यरस' में पति-पत्नी रजिस्टर के कार्यालय से विवाह कार्यवाही करके बाहर निकले ही हैं परंतु इन कुछ ही क्षणों में पति बन चुके प्रेमी का व्यवहार अपनी पत्नी बन चुकी प्रेमिका के प्रति बहुत बदल गया है। नायक ऐसा अनुभव करता है कि - ''उसने विवाह करके घाटा खा लिया है और उसे

पराजित करने वाला उसका साथी तत्काल हर चीज की माँग करने का अधिकारी बन गया है।"[65] उसे लगता है कि पत्नी की छोटी बहन 'नयना' पत्नी से बेहतर है और उसे नयना से ही विवाह करना चाहिए था। वही लड़की जिसके प्रति नायक अत्याधिक आकर्षित था, जिससे बातें करते न तो वह थकता था और न ही बातें खत्म होने पर आती थी, अब जब पत्नी बन गई है तो कोशिश करने पर भी - "एक भी वाक्य नहीं बन पा रहा है। पता नहीं, कहाँ भाग गए सारे के सारे रमणीक शब्दों के प्रेमपरक वाक्य विन्यास।"[66]

'दाम्पत्य' कहानी में ज्ञानरंजन ने हल्के-फुल्के और मजाकिया ढ़ंग से दाम्पत्य जीवन की एकरसता को उसकी ऊब और व्यर्थता को स्पष्ट कर दिया है। नायक अपनी पत्नी से इस कदर ऊब चुका है कि पत्नी का प्रेमपूर्ण छेड़छाड़ भरा व्यवहार अब उसे चिढ़ाने वाला लगता है। खासकर वह सोचता है कि - "ये सब चीजें काश तुम पहले ही कर चुकी होती तो जीवन कितना-सहज और आसान हो जाता।"[67] पत्नी को खुश करने के लिए उसे सोचना-विचारना पड़ता है और न चाहते हुए भी मात्र उसकी खुशी की खातिर कुछ काम करने पड़ते हैं। पत्नी के साथ प्रेम संबंधी क्रिया-कलाप वह मन से नहीं करता अपितु उसे खुश करने के उद्देश्य से यांत्रिक रूप से उसके साथ प्रेम व्यवहार करता है। सोती हुई पत्नी को देख वह वितृष्ण अनुभव करता है और उसके मन में छुटकारे की बात आती है - "बहुत भयानक खयाल मेरे मन में आया। यह खयाल कि अच्छा है मैं निराश और अकेला हो जाऊँ ताकि खुद तो समाज के योग्य रह सकूँ। हाय ये छुटकारा।"[68] सोती हुई स्त्री उसकी पत्नी है इसलिए वह उससे ऊब अनुभव करता है और सोचता है - "यह सोती हुई औरत मेरी पत्नी न होती और मैं एक चोर होता तो आज चाँदी होती।"[69] यहाँ ध्यान में आता है कि नायक अपनी पत्नी से दूर रहना चाहता है। यह एक भयानक मानसिकता है कि अपनी पत्नी को पत्नी के रूप में स्वीकारने की बजाय दूसरी स्त्री की चाहत रखता है।

इस प्रकार आर्थिक विषमता, अनमेल संबंध, रूचियों की भिन्नता के साथ ऊब और निराशा के कारण दांपत्य संबंध टूट रहे दिखाई देते हैं। वेदप्रकाश अमिताभ कहते हैं - "आर्थिक विषमता, जटिल मन:स्थिति, रूचियों की भिन्नता, अनमेल संबंध, रागात्मक लगाव की समाप्ति आदि का मिला-जुला दबाव दाम्पत्य जीवन को खोखला कर रहा है। आज के कहानीकार को उस खोखलेपन का पूरा-पूरा अहसास है। वह

दाम्पत्य संबंधों को टूटन की बेहद तटस्थता और इमानदारी से उभार रहा है। वह एक ऐसी जिंदगी से पहचान कराने में जुटा हुआ है जिसके दो किनारे दूर और दूर होते जाते हैं और उन्हें जोड़ने वाला जल सूखता जा रहा है।''[70]

निष्कर्ष -

ज्ञानरंजन की कुल 26 कहानियों में से 12 कहानियों में मुख्य रूप से पारिवारिक जीवन का चित्रण हुआ है। परिवार में पति-पत्नी, पिता-पुत्र, माता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्री, भाई-बहन, भाई-भाई, सास-बहू तथा देवर-भाभी आदि एक दूसरे के साथ रिश्ते से जुड़े हुए हैं। ज्ञानरंजन की कहानियों में प्रधान रूप से संयुक्त परिवार का चित्रण हुआ है। वर्तमान युग में संयुक्त परिवार टूटता जा रहा है, परिवार में एक-दूसरे के प्रति अविश्वास बढ़ता जा रहा है और अजनबीपन, घुटन, आत्महत्या, अर्थ की प्रधानता, व्यक्तिवाद की भावना, आधुनिकता का प्रभाव आदि कारणों से संयुक्त परिवार टूटता जा रहा है।

ज्ञानरंजन की कहानियों में आर्थिक तनाव, पुराने और नए विचारों की टकराहट, व्यक्तिवाद की भावना, अकेलापन आदि का चित्रण है। जहाँ आर्थिक तनाव कम है, वहाँ पारिवारिक संबंध में तनाव कम है और जहाँ आर्थिक तनाव की तीव्रता है, वहाँ परिवार में तनाव अधिक है। 'पिता' कहानी में नायक का बड़ा भाई नौकरी करता है तो परिवार में भ्रातृत्व संबंध में संघर्ष नहीं है। किंतु 'संबंध' कहानी में नोकरी की वजह से बड़ा भाई छोटे भाई का मर जाना ही ठीक समझ रहा है। भाई-बहन के रिश्तों में अंतर आ गया, भाई से बड़कर बहन अपने प्रियकर को महत्त्व दे रही है। इसकी अभिव्यक्ति 'दिलचस्पी' कहानी में मुकुल और बहन नमिता के द्वारा हुई है। 'क्षणजीवी' में अपनी बहन की शादी करने में असमर्थ भाई बहन को गाल्यिाँ देता है। पिता-पुत्र के रिश्तों में अंतर आ गया है। 'फेंस के इधर और उधर' में आधुनिक विचार के पिता को छोड़कर हर कहानी के पिता अपने पुत्र के प्रति कठोरता से पेश आता है। इस कारण हर कहानी के पिता एक जैसे लग रहे हैं। 'यात्रा' कहानी में पुत्र अपने पिता की मृत्यु होने पर भी नहीं रोता। माता-पुत्र के संबंध में माता अपने पुत्र के भविष्य से चिंतित है। सास-बहू संबंध में बहू सास पर दबाव ड़ाल रही है। इसकी अभिव्यक्ति 'शेष होते हुए' कहानी में मझले की माँ और उसकी भाभी के द्वारा होती है। देवर-भाभी के संबंध में अंतर आ गया है। ज्ञानरंजन ने पति-पत्नी संबंध का प्रधान रूप से चित्रण किया है। पति-पत्नी में टूटते संबंध और अजनबीपन, व्यक्तिवाद की भावना आदि है।

'कलह', 'शेष होते हुए', 'पिता', 'छलांग', 'मनहूस बंगला', 'यात्रा' आदि कहानियों में पति-पत्नी संबंध का चित्रण हुआ है। तो गौण रूप में 'बहिर्गमन', 'मृत्यु', 'हास्यरस', 'दांपत्य' आदि कहानियों में चित्रण हुआ है। इनके संबंध में खाई है, एक साथ होकर भी मन से अलग हैं कहीं दोनों में प्रेम भी है।

उपर्युक्त संपूर्ण विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि ज्ञानरंजन की कहानियों में बदलते पारिवारिक संबंध का यथार्थ चित्रण हुआ है। पारिवार विघटन में आर्थिक समस्या मुख्य कारण है और साथ ही व्यक्तिवाद की भावना, पारिवारिक क्लेश, अविश्वास आदि है। इसकी अभिव्यक्ति 'शेष होते हुए', 'अमरूद का पेड़', 'मनहूस बंगला' कहानियों में हुई है।

पुराने विचार, विवशता, विषम परिस्थिति, आर्थिक समस्या, व्यक्तिवाद की भावना आदि कारणों से रिश्तों में अंतर आ रहा है। इसकी अभिव्यक्ति 'यात्रा', 'क्षणजीवी', 'कलह' कहानियों के द्वारा होती है।

आर्थिक विषमता, अनमेल संबंध, ऊब, रूचियों में भिन्नता, निराशा, जटिल मन:स्थिति आदि के कारण दाम्पत्य संबंध टूट रहे हैं। इसकी अभिव्यक्ति 'कलह', 'हास्यरस', 'दाम्पत्य' आदि कहानियों के द्वारा होती है।

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य का समाज से अटूट संबंध है। साहित्य देश-काल-परिस्थिति से प्रभावित रहता है। इसीलिए प्रत्येक देश की कहानी वहाँ की संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन का प्रतिबिंब होती है। सामाज की इकाई व्यक्ति है समाज में वह परिवार का अंग बनकर जीता है 'परिवार' अथवा 'कुटुंब' का भारत में विशेष स्थान है।

विश्व के अन्य देशों में जहाँ पारिवारिक संबंध कमजोर होते हुए दिखाई देते हैं। अपने यहाँ आज भी पारिवारिक संबंधों में स्नेहार्द्रता, दृष्टिगोचर होती है। इसमें कोई शक नहीं कि पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव वैश्विकरण के कारण बढ़ता जा रहा है फिर भी भारतीय संस्कृति पूरी तरह नष्ट नहीं हुई है। जो पुराना है अच्छा है, जो नया है स्वीकार्य है, दोनों को लेकर समाज विकास कर रहा है। इनमें जो त्रुटियाँ, कमजोरियाँ हैं उनकी ओर कहानीकार उंगली निर्देश करता है।

संदर्भ सूची

1. रामबिहारी तोमर सिंह, हिंदू विवाह एवं परिवार की समस्याएँ, पृ. 148
2. श्रीमाल सुनीता, मोहन राकेश के साहित्य में पारिवारिक संबंधों के विघटन की स्थितियाँ, पृ. 13
3. कैलाशनाथ शर्मा एवं शंभूरत्न त्रिपाठी, पारिवारिक समाजशास्त्र, पृ. 13
4. वही, पृ. 30
5. सुनीता श्रीमाल, मोहन राकेश का साहित्य पारिवारिक संबंधों के विघटन की स्थितियाँ, पृ. 22-23
6. वही, पृ. 15
7. वही, पृ. 25
8. रामबिहारी तोमर सिंह, हिंदू विवाह एवं परिवार की समस्याएँ, पृ. 142
9. सुनीता श्रीमाल, मोहन राकेश का साहित्य पारिवारिक संबंधों के विघटन की स्थितियाँ, पृ. 23-24
10. कैलाशनाथ शर्मा एवं शंभूरत्न त्रिपाठी, पारिवारिक समाज शास्त्र, पृ. 38
11. सुनीता श्रीमाल, मोहन राकेश का साहित्य पारिवारिक संबंधों के विघटन की स्थितियाँ, पृ. 24
12. कैलाशनाथ शर्मा, शंभूरत्न त्रिपाठी, पारिवारिक समाज शास्त्र, 39
13. सुनीता श्रीमाल, मोहन राकेश का साहित्य पारिवारिक संबंधों के विघटन की स्थितियाँ, पृ. 30
14. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिंदी कहानी का परिपार्श्व, पृ. 109
15. रामदरश मिश्र, हिंदी कहानी अंतरंग पहचान, पृ. 84
16. सं. सत्यप्रकाश मिश्र, कहानीकार ज्ञानरंजन, पृ. 67
17. वही, पृ. 119
18. सं. देश निर्मोही, पल-प्रतिपल, पृ. 43
19. सं. सत्यप्रकाश मिश्र, कहानीकार ज्ञानरंजन, पृ. 114
20. वही, पृ. 113
21. विजय मोहन सिंह, आज की कहानी, पृ. 126
22. पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी सोच और समझ, पृ. 12
23. ज्ञानरंजन, फेंस के इधर और उधर, पृ. 33

24. ज्ञानरंजन, फेंस के इधर और उधर, पृ. 34

25. वही, पृ. 76

26. वही, पृ. 76

27. वही, पृ. 77

28. वही, सपना नहीं, पृ. 200

29. वही, पृ. 237

30. वही, क्षणजीवी, पृ. 14

31. वही, सपना नहीं, पृ. 100

32. सं. सत्यप्रकाश मिश्र, कहानीकार ज्ञानरंजन, पृ. 99

33. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 64

34. प्रल्हाद अग्रवाल, हिंदी कहानी का साँतवा दशक, पृ. 22

35. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिंदी कहानी का परिपार्श्व, पृ. 114

36 ज्ञानरंजन, फेंस के इधर और उधर, पृ. 73

37. वही, पृ. 92

38. वही, पृ. 133

39. वही, क्षणजीवी, पृ. 62

40. वही, सपना नहीं, पृ. 196

41. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 69

42. ज्ञानरंजन, फेंस के इधर और उधर, पृ. 69

43. वही, पृ. 78

44. वही, पृ. 73

45. वही, पृ. 103

46. वही, पृ. 134

47. वही, क्षणजीवी, पृ. 21

48. ज्ञानरंज, क्षणजीवी, पृ. 33

49. वही, सपना नहीं, पृ. 195

50. वही, पृ. 109

51. वही, फेंस के इधर और उधर, पृ. 34

52. वही, पृ. 69

53. वही, पृ. 75

54. वही, पृ. 74

55. वही, पृ. 137

56. वही, पृ. 106

57. वही, क्षणजीवी, पृ. 63

58. वही, फेंस के इधर और उधर, पृ. 86

59. रामबिहारी तोमर सिंह , हिंदू विवाह एवं परिवार की समस्याएँ, पृ. 156

60. सं. सत्यप्रकाश मिश्र, कहानीकार ज्ञानरंजन, पृ. 82

61. ज्ञानरंजन, फेंस के इधर और उधर, पृ. 74

62. वही, क्षणजीवी, पृ. 22

63. पुष्पपाल सिंह, समकालीन कहानी युग बोध का संदर्भ, पृ. 28

64. वेदप्रकाश अमिताभ, हिंदी कहानी के सौ वर्ष, पृ. 113

65. ज्ञानरंजन, सपना नहीं, पृ. 99

66. वही, पृ. 109

67. वही, पृ. 112

68. वही, सपना नहीं, पृ. 116

69. वही, पृ. 116

70. वेदप्रकाश अमिताभ, हिंदी कहानी के सौ वर्ष, पृ. 114